

सीयूके बुलेटिन

सीयूके ने गणतंत्र दिवस मनाया





लगभग दो दशकों की बातचीत के बाद, भारत के गणतंत्र दिवस, 26 जनवरी 2026 को भारत और यूरोपीय संघ के बीच मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन ने इसे “सभी सौदों की मां” के रूप में वर्णित किया क्योंकि यह व्यापार समझौता वैश्विक अर्थव्यवस्था का 25% प्रतिनिधित्व करता है। इस समझौते से भारत में 1.4 बिलियन लोगों और यूरोप में लाखों लोगों के लिए व्यापार, निवेश, प्रौद्योगिकी और रक्षा उपकरणों जैसे क्षेत्रों में नए अवसर पैदा होने की उम्मीद है। समझौते की एक प्रमुख विशेषता यह है कि भारत 97% यूरोपीय वस्तुओं पर टैरिफ को कम या समाप्त कर देगा। उदाहरण के लिए, भारत ने पहले यूरोपीय कारों पर 70% - 110% शुल्क लगाया था; इन शुल्कों को अगले पांच वर्षों में धीरे-धीरे घटाकर 10% कर दिया जाएगा। नतीजतन, भारत में यूरोपीय कारों की कीमतें घट जाएंगी जिससे वे आम लोगों के लिए अधिक किफायती हो जाएंगी। भारत और यूरोपीय संघ संयुक्त रूप से इस द्विपक्षीय व्यापार को 2032 तक दोगुना करने का लक्ष्य रख रहे हैं। भारत और यूरोपीय संघ के बीच कृषि क्षेत्र, कार्बन सीमा समायोजन तंत्र और विभिन्न क्षेत्रों में भारत में यूरोपीय संघ के निवेश के पैमाने पर चर्चा चल रही है। इससे पहले, भारत ने यूरोप से आयातित कृषि उत्पादों पर 36% टैरिफ लगाया था; अब, उस राशि को कम करने के बारे में भी बातचीत चल रही है। रिपोर्टों के अनुसार, दोनों देश इस समझौते से कृषि क्षेत्र को बाहर रखने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन कोई अंतिम निर्णय नहीं लिया गया है।

वैकल्पिक रूप से, यूरोपीय संघ लगभग 99.5% भारतीय वस्तुओं, जैसे समुद्री उत्पादों, चमड़े, आधार धातुओं, आभूषणों पर शुल्क को कम या समाप्त कर देगा, जिससे वे यूरोपीय बाजारों में शुल्क-मुक्त प्रवेश कर सकेंगे। इस समझौते का एक अन्य महत्वपूर्ण घटक जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाली आपदा राहत का समर्थन करने के लिए भारत में यूरोपीय संघ-भारत जलवायु मंच की स्थापना है, जिसके लिए यूरोपीय संघ ने जलवायु से संबंधित चुनौतियों को नियंत्रित करने और सतत विकास को बढ़ावा देने के प्राथमिक उद्देश्य के साथ 500 मिलियन यूरो प्रदान किए। यह मुक्त व्यापार समझौता भारत और यूरोपीय संघ दोनों को लाभान्वित करेगा, क्योंकि दोनों देशों को अपने-अपने बाजारों तक आसान पहुंच प्राप्त होगी। इससे पहले, भारत यूरोपीय बाजारों में बड़ी मात्रा में उत्पादों का निर्यात करता था, लेकिन गैर-टैरिफ बाधाओं के कारण सीमित पहुंच का सामना करना पड़ता था। इस समझौते में टैरिफ बाधाओं का उल्लेख है जिन्हें कम या समाप्त कर दिया जाएगा, लेकिन यह स्पष्ट रूप से गैर-टैरिफ बाधाओं को संबोधित नहीं करता है। इसके अलावा, यह व्यापार समझौता भारत के सेमीकंडक्टर और खनिज उद्योगों के लिए दीर्घकालिक अवसर पैदा करेगा। 1995 से, विश्व व्यापार संगठन अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से संबंधित मामलों को तैयार करने और विनियमित करने के लिए जिम्मेदार है। वर्तमान परिदृश्य में, संस्थागत चुनौतियों के कारण इसकी प्रभावशीलता में गिरावट आई है। इसलिए, भारत ने संयुक्त राष्ट्र के बहुपक्षीय निकायों पर पूरी तरह से निर्भर रहने के बजाय कई देशों के साथ द्विपक्षीय व्यापार समझौते बनाने का फैसला किया। इस मुक्त व्यापार समझौते का एक और महत्वपूर्ण पहलू चीन पर अत्यधिक निर्भरता को कम करना है। वर्षों से, चीन ने दुर्लभ पृथ्वी खनिजों की आपूर्ति श्रृंखला को एक उपकरण के रूप में नियंत्रित किया है ताकि निष्कर्षण और आयात-निर्यात के लिए आर्थिक निर्भरता पैदा करके अन्य देशों पर प्रभुत्व स्थापित किया जा सके। ये मुक्त व्यापार समझौते देशों को विभिन्न आर्थिक जाल से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। एक देश पर भरोसा करने के बजाय, कई देशों के साथ विविध साझेदारी प्रत्येक देश के आर्थिक हितों की रक्षा करेगी, वैश्विक शक्ति को संतुलित करेगी और किसी भी एक देश को प्रमुख वैश्विक शक्ति बनने से रोकेगी।

प्रो. बडू सत्यनारायण
कुलपति
कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय, कलबुर्गी



कृत्रिम बुद्धिमत्ता 21वीं सदी की परिभाषित शक्ति बनने के लिए तैयार है, जिसका शिक्षा पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ेगा। भारत का लक्ष्य भविष्य के लिए तैयार शिक्षा प्रणाली विकसित करना है, इसलिए यह जांचना महत्वपूर्ण है कि कैसे एआई को एकीकृत किया जा सकता है, समानता के अंतर को कम किया जा सकता है और शिक्षण प्रभावशीलता को मजबूत किया जा सकता है। हाल के आंकड़ों से पता चलता है कि लगभग 60% भारतीय कॉलेज और विश्वविद्यालय अब छात्रों को अकादमिक कार्यों में जेनरेटिव एआई सहित एआई उपकरणों का उपयोग करने की अनुमति देते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय सर्वेक्षणों से पता चलता है कि लगभग 68 - 71% प्रोफेसर शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए एआई उपकरणों का उपयोग करते हैं, जिनमें से चैटजीपीटी जैसे उपकरण विशेष रूप से लोकप्रिय हैं। यह बदलाव तकनीकी नवीनता के बजाय एक शैक्षिक समर्थन उपकरण के रूप में एआई की बढ़ती संस्थागत स्वीकृति को दर्शाता है। साथ ही, यह जिम्मेदार, नैतिक उपयोग सुनिश्चित करने के लिए स्पष्ट दिशानिर्देश स्थापित करने के महत्व को रेखांकित करता है। एआई को सीखने में सहायता करनी चाहिए, न कि मानव क्षमता, रचनात्मकता या सार्थक कक्षा जुड़ाव को प्रतिस्थापित करना चाहिए। प्रौद्योगिकी शिक्षकों और शिक्षार्थियों के हाथों में एक उपकरण बनी रहनी चाहिए, बौद्धिक प्रयास का प्रतिस्थापन नहीं।

एक विश्वविद्यालय के रूप में, हमें एक स्पष्ट रुख अपनाना चाहिए: शिक्षा में एआई का जिम्मेदार एकीकरण अनुसंधान, अंतःविषय सहयोग और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए नए रास्ते खोल सकता है। हमारे छात्रों और संकाय के लिए मेरा संदेश स्पष्ट है: आइए हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता को शैक्षणिक और पेशेवर क्षेत्रों में समर्थन देने के लिए एक डिजिटल भागीदार के रूप में अपनाएं। मानव बुद्धि को तकनीकी नवाचार के साथ जोड़कर, हम एक गतिशील शैक्षणिक वातावरण का निर्माण कर सकते हैं जो उत्कृष्टता, समावेश और आजीवन सीखने को बढ़ावा देता है।

प्रो. आर.आर. बिरादार
कुलसचिव
कर्नाटक केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कलबुर्गी

संस्कृतियों के बीच एक पुल के रूप में रंगमंच:

अंग्रेजी विभाग में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन किया गया



2 दिसंबर 2025: अंग्रेजी विभाग, सीयूके ने “नाटक और थिएटर में मिथक, इतिहास और परंपरा” पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन के साथ कला, संस्कृति और छात्रवृत्ति का एक जीवंत उत्सव आयोजित किया। इस कार्यक्रम ने देश और विदेश के प्रतिष्ठित शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं और रंगमंच के शौकीनों को एक साथ लाया, जिससे समाज और मानव अनुभव को समझने में नाटक की स्थायी प्रासंगिकता पर सार्थक बातचीत के लिए एक मंच तैयार हुआ। अपने उद्घाटन भाषण में, माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने मानव मन और दृष्टिकोण को आकार देने में नाटक की शक्तिशाली भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि रंगमंच लोगों को विभिन्न संस्कृतियों, समुदायों और परंपराओं को समझने में सक्षम बनाता है, जो एक ऐसे माध्यम के रूप में कार्य करता है जो व्यक्तियों को सीमाओं से परे जोड़ता है। मुख्य भाषण देते हुए, काठमांडू विश्वविद्यालय, नेपाल के प्रो. खगेंद्र आचार्य ने रंगमंच को राष्ट्रों और संस्कृतियों के बीच एक सेतु के रूप में वर्णित किया।

उन्होंने इस बारे में बात की कि कैसे नाटक ऐतिहासिक आख्यानो, अनुष्ठानों और परंपराओं को पुनर्जीवित करता है, उन्हें मंच पर पुनर्जीवित करता है, साथ ही सांस्कृतिक बंधनों को मजबूत करता है, विशेष रूप से नेपाल और कर्नाटक जैसे क्षेत्रों के बीच। चर्चा में और गहराई जोड़ते हुए, कश्मीर केंद्रीय विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. रविंदर नाथ ने जोर दिया कि नाटक मानवीय भावनाओं और वास्तविकताओं को दर्शाता है। उन्होंने टिप्पणी की कि रंगमंच समाज में अहसास और परिवर्तन दोनों को प्रेरित करता है और रंगमंच अध्ययन को मजबूत करने के लिए एनईपी -2020 के दृष्टिकोण के साथ संरेखित करता है।

ईएफएलयू, हैदराबाद के माननीय कुलपति प्रो. एन. नागराजू ने साहित्य और समाज में मिथक और इतिहास की स्थायी उपस्थिति को रेखांकित किया, पुनर्जागरण काल से लेकर युद्धोत्तर युग तक उनके प्रभाव का पता लगाया। सीयूके के कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादार ने जीवन के दर्पण के रूप में नाटक पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मिथक, इतिहास और रंगमंच मिलकर मानव अनुभव की आत्मा, शरीर और श्वास का निर्माण करते हैं, जो ऐसे सबक सिखाते हैं जो मूल्यों और चरित्र को आकार देने में मदद करते हैं।

अपने परिचयात्मक भाषण में अंग्रेजी विभाग के अध्यक्ष प्रो. बसवराज डोणूर ने नाटक और रोजमर्रा की जिंदगी के बीच गहरे संबंध के बारे में बात की और रंगमंच को एक सामूहिक सामाजिक अभिव्यक्ति के रूप में वर्णित किया जो सच्चाई और वास्तविकता को प्रकट करता है। सम्मेलन के लिए अवधारणा नोट आयोजन सचिव, श्री महेंद्र एम. द्वारा प्रस्तुत किया गया था, और कार्यक्रम में प्रतिष्ठित संकाय सदस्यों, भारत भर के प्रतिनिधियों, शोध छात्रों और छात्रों ने भाग लिया।



भारत के शीर्ष 10 में शामिल सुश्री मधुष्मिता हातिमुरिया को होप बैठक के लिए चुना गया

3 दिसंबर 2025: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय के लिए एक गर्व के क्षण में रसायन विज्ञान विभाग से पीएचडी स्कॉलर सुश्री मधुष्मिता हातिमुरिया को भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) द्वारा नोबेल पुरस्कार विजेताओं के साथ प्रतिष्ठित 17वीं होप बैठक में भाग लेने के लिए नामित किया गया है, जो मार्च 2 - 6, 2026 से सुकुबा, जापान में आयोजित की जाएगी।

सहायक प्रोफेसर डॉ. अशोक पम्बती के मार्गदर्शन में काम करते हुए, सुश्री मधुष्मिता “ए ससटेनेबल साल्वन्ट इंजीनियरिंग अप्रोच टु एन्हांस एंजाइम ऐक्टिविटी फॉर इन्डस्ट्रीअल अपलीकेशन्स” पर अपना शोध प्रस्तुत करेंगी। उनका चयन एक उल्लेखनीय उपलब्धि है, क्योंकि भारत भर में केवल दस छात्रों को इस विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त कार्यक्रम के लिए

डीएसटी द्वारा चुना गया है। यह कार्यक्रम युवा शोधकर्ताओं और नोबेल पुरस्कार विजेताओं को एक साथ लाएगा, जो अकादमिक आदान-प्रदान, नवाचार और प्रेरणा के लिए एक दुर्लभ मंच प्रदान करेगा। कार्यक्रम के लिए यात्रा और आवास का समर्थन डीएसटी, भारत और जापान सोसाइटी फॉर द प्रमोशन ऑफ साइंस (जेएसपीएस), जापान द्वारा किया जाएगा। माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण, डीन, स्कूल ऑफ रासायनिक विज्ञान प्रो. वेंकट रमण दोड्डी और रसायन विज्ञान विभाग के संकाय ने इस उत्कृष्ट उपलब्धि पर विद्वान को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दीं। उनका चयन न केवल एक महत्वपूर्ण व्यक्तिगत मील का पत्थर है, बल्कि वैश्विक मंच पर सीयूके की बढ़ती अनुसंधान उत्कृष्टता को भी प्रदर्शित करता है, जो कई युवा विद्वानों को बड़ा सपना देखने और उच्च लक्ष्य रखने के लिए प्रेरित करता है।

नवाचार को शक्ति देना: सीयूके का एफडीपी इलेक्ट्रिक मोबिलिटी में एआई और मशीन लर्निंग का पता लगाता है

8 दिसंबर 2025: सीयूके ने “इंटिग्रेशन ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एण्ड मशीन लर्निंग इन इलेक्ट्रिक मोबिलिटी सिस्टम” पर एक सप्ताह के एआईसीटीई-प्रायोजित अटल संकाय विकास कार्यक्रम (एफडीपी) का उद्घाटन किया। विद्युत अभियांत्रिकी विभाग द्वारा आयोजित, यह कार्यक्रम स्मार्ट मोबिलिटी और बुद्धिमान ऊर्जा प्रणालियों में उभरती प्रगति का पता लगाने के लिए देश भर के संकाय, शोधकर्ताओं और पेशेवरों को एक साथ लाता है।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने कहा कि स्मार्ट परिवहन, इलेक्ट्रिक वाहन और बुद्धिमान ऊर्जा समाधान भारत के गतिशीलता परिदृश्य के भविष्य को आकार दे रहे हैं। मुख्य अतिथि श्री टी. सीताराम, वरिष्ठ उपाध्यक्ष - मशीन लर्निंग इंजीनियरिंग, डीबीएस बैंक ने मुख्य भाषण दिया, जिसमें इलेक्ट्रिक मोबिलिटी, बैटरी प्रदर्शन और ऊर्जा प्रबंधन को बढ़ाने में एआई- संचालित विश्लेषण और स्वचालन की भूमिका पर जोर दिया गया।

कार्यक्रम समन्वयक प्रो. अमरेन्द्र मत्सा ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और कहा कि एफडीपी में लगभग साठ प्रतिभागी भाग ले रहे हैं, जिसमें विशेषज्ञ व्याख्यान, हैंड्स-ऑन सत्र और एआई अनुप्रयोगों, बैटरी एनालिटिक्स, टिकाऊ डिजाइन और स्मार्ट ग्रिड सिस्टम पर प्रदर्शन शामिल हैं। सत्र का संचालन सह-समन्वयक डॉ. अरुणकुमार पाटिल ने किया, जिसमें संकाय सदस्य और प्रतिभागी उपस्थित थे। यह कार्यक्रम नवाचार को बढ़ावा देने और सतत और बुद्धिमान गतिशीलता के भविष्य को चलाने के लिए आवश्यक ज्ञान के साथ शिक्षकों को लैस करने के लिए सीयूके की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।



सीयूके ने डॉ. बी. आर. अम्बेडकर का 69वां महापरिनिर्वाण दिवस मनाया

8 दिसंबर 2025: सीयूके ने भारतीय संविधान के वास्तुकार और समानता, न्याय और सामाजिक परिवर्तन के चैंपियन के रूप में उनकी स्थायी विरासत को श्रद्धांजलि देते हुए भारत रत्न बाबासाहेब डॉ. बी आर अम्बेडकर के 69वें महापरिनिर्वाण दिवस को धूमधाम से मनाया।

सभा को संबोधित करते हुए माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने इस बात पर जोर दिया कि संविधान राष्ट्र की प्रगति और समावेशी विकास का आधार बना हुआ है। उन्होंने कहा कि विकसित भारत 2047 का विजन स्वतंत्रता से पहले भी डॉ. अम्बेडकर द्वारा निर्धारित सिद्धांतों में गहराई से निहित है। समानता, सामाजिक न्याय और गरिमा के संविधान के मूल्यों पर प्रकाश डालते हुए, उन्होंने शैक्षणिक समुदाय से आग्रह किया कि वे एक ऐसी प्रणाली पर गर्व करें जो हर नागरिक का पोषण और सशक्त बनाती है।

संसाधन व्यक्ति प्रो. भीमराव भोसले ने एक दूरदर्शी विचारक, अर्थशास्त्री और समाज सुधारक के रूप में डॉ. अम्बेडकर के गहरे प्रभाव पर विचार किया। उन्होंने महापरिनिर्वाण को ज्ञानोदय और नवीनीकरण के प्रतीक के रूप में वर्णित किया, और कहा कि डॉ. अम्बेडकर के आदर्श समकालीन चुनौतियों का समाधान प्रदान करते हैं।



उन्होंने छात्रों और विद्वानों से अम्बेडकर के दर्शन को सत्य, निस्वार्थता और मानवीय गरिमा में निहित उसकी सच्ची भावना में समझने का आह्वान किया। कुलसचिव (प्र.) और परीक्षा नियंत्रक, डॉ. कोटा साई कृष्णा ने डॉ. अम्बेडकर के जीवन में शिक्षा की परिवर्तनकारी शक्ति पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उन्होंने ज्ञान और सुधार के माध्यम से हाशिए पर रहने वालों को सशक्त बनाया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि अम्बेडकर का समानता और स्वतंत्रता का संदेश सार्वभौमिक और प्रासंगिक बना हुआ है।

कार्यक्रम ने संकाय, छात्रों और कर्मचारियों को एक सामूहिक श्रद्धांजलि में एक साथ लाया, न्याय, शिक्षा और सामाजिक सद्भाव के आदर्शों के प्रति विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता की पुष्टि की जो राष्ट्र के भविष्य को आकार देना जारी रखता है।



कर्नाटक केन्द्रीय विश्वविद्यालय बैडमिंटन पुरुष टीम 3 जनवरी से 5 जनवरी 2019 तक विजयवाड़ा के केएल विश्वविद्यालय में होने वाले दक्षिण क्षेत्र अंतर-विश्वविद्यालय बैडमिंटन टूर्नामेंट में भाग लेने के लिए तैयार है। माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण, कुलसचिव प्रो. आर आर बिरादार, परीक्षा नियंत्रक डॉ. कोटा साई कृष्णा, शारीरिक शिक्षा निदेशक डॉ. एम एस पासोडी, वित्त अधिकारी रामादुराई, प्रो. आर एम चन्नवीर, लाइब्रेरियन डॉ. पी एस कट्टीमनी और खेल समन्वयक डॉ. साई अभिनव उपस्थित थे और टीम का स्वागत किया।

गरिमा के लिए आवाज: सीयूके में अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस मनाया गया

12 दिसंबर 2025: सीयूके में विधि विभाग ने तालुका विधिक सेवा समिति और बार एसोसिएशन, आलंद के सहयोग से अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस एक विचारोत्तेजक कार्यक्रम के साथ मनाया, जिसमें रोजमर्रा की जिंदगी में समानता, न्याय और गरिमा के महत्व पर प्रकाश डाला गया। इस कार्यक्रम में कानूनी विशेषज्ञों, शिक्षाविदों और छात्रों को एक साथ लाया गया ताकि उन संवैधानिक मूल्यों पर विचार किया जा सके जो प्रत्येक व्यक्ति के अधिकारों की रक्षा करते हैं।

सभा को संबोधित करते हुए, मुख्य अतिथि मिस सुमन चित्तारगी, प्रधान सिविल जज और जेएमएफसी, आलंद ने इस बात पर जोर दिया कि मानवाधिकार एक न्यायपूर्ण समाज की नींव हैं। उन्होंने कहा कि मानवाधिकार व्यक्तियों को समानता, सम्मान और गरिमा के साथ जीने में सक्षम बनाते हैं, जिससे जीवन की गुणवत्ता बढ़ती है। माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने मानवाधिकारों की रक्षा में न्यायपालिका की भूमिका पर प्रकाश डाला और इस बात पर जोर दिया कि प्रत्येक नागरिक को अपने अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में पता होना चाहिए। उन्होंने छात्रों से भेदभाव को खत्म करने और सामाजिक सद्भाव को मजबूत करने में शिक्षा के महत्व को समझने का आग्रह किया।



मुख्य वक्ता श्री एम. वी. एकबोटे, एक अधिवक्ता ने मानवाधिकारों की वैश्विक प्रासंगिकता के बारे में बात करते हुए कहा कि वे संविधान में गहराई से निहित हैं और बिना भेदभाव के स्वतंत्रता और समानता की गारंटी देते हैं। उन्होंने नागरिकों को मानवाधिकारों के उल्लंघन के खिलाफ खड़े होने और संवैधानिक मूल्यों को बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित किया।

विधि अध्ययन स्कूल के डीन डॉ. बसवराज कुबकड्डी ने सभा का स्वागत किया और कानूनी बिरादरी के गणमान्य व्यक्तियों, संकाय सदस्यों, शोध छात्रों और कार्यक्रम में भाग लेने वाले छात्रों की उपस्थिति पर ध्यान दिया। कार्यक्रम का समापन न्याय, समानता और गरिमा को बनाए रखने की एक नई प्रतिबद्धता के साथ हुआ - सभी को याद दिलाते हुए कि एक निष्पक्ष और दयालु समाज के निर्माण के लिए मानव अधिकारों के प्रति जागरूकता और सम्मान आवश्यक है।

अंतर्राष्ट्रीय कानून एफडीपी के माध्यम से वैश्विक शैक्षणिक संबंधों को मजबूत करता है

16 दिसंबर 2025: सीयूके ने “अंतर्राष्ट्रीय कानून के बहुविषयक पहलुओं” पर एक सप्ताह के ऑनलाइन संकाय विकास कार्यक्रम (एफडीपी) का उद्घाटन किया, जो संयुक्त रूप से कानून विभाग, सीयूके और व्यवसाय प्रबंधन और कानून विभाग, प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय मॉरीशस (यूटीएम) द्वारा आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम ने समकालीन वैश्विक कानूनी चुनौतियों और सहयोगात्मक शैक्षणिक जुड़ाव पर विचार-विमर्श करने के लिए शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं और कानूनी पेशेवरों को एक साथ लाया।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने समकालीन वैश्विक व्यवस्था में अंतर्राष्ट्रीय कानून की बढ़ती प्रासंगिकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय कानूनी ढाँचे कमजोर राष्ट्रों के शोषण को रोकने, जलवायु परिवर्तन की चिंताओं को दूर करने, देशों के बीच जिम्मेदारियों को परिभाषित करने और सीमा पार विवादों को हल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मॉरीशस के प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय की डॉ. भावना महादेव ने कहा कि इस तरह के एफडीपी भारत और मॉरीशस के बीच शैक्षणिक सहयोग को मजबूत करते हैं और वैश्विक चुनौतियों को

समझने और उनका समाधान करने में मदद करते हैं। यूटीएम में व्यवसाय स्कूल, मैनेजमेंट और फाइनेंस के डीन डॉ. बिसम नवत सिंह ने कहा कि यह कार्यक्रम कानूनी साक्षरता को बढ़ाएगा और विशेष रूप से द्वीप अर्थव्यवस्थाओं में आर्थिक स्थिरता में योगदान देगा, साथ ही भविष्य के सहयोगात्मक अनुसंधान के रास्ते खोलेगा। यूटीएम के माननीय महानिदेशक, दिनेशक हरीराम ने बताया कि एफडीपी में अंतर्राष्ट्रीय कानून के प्रमुख क्षेत्रों को शामिल किया जाएगा, जिसमें मानवाधिकार, आर्थिक कानून और पर्यावरण कानून शामिल हैं। उन्होंने विभिन्न शैक्षणिक और व्यावसायिक पृष्ठभूमि के लगभग 475 उपस्थित लोगों की उत्साही

भागीदारी के लिए सराहना व्यक्त की। इससे पहले, सीयूके विधि अध्ययन स्कूल के डीन डॉ. बसवराज कुबकड्डी ने गणमान्य व्यक्तियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। डॉ. जयंत बरुआ ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। एफडीपी वैश्विक शैक्षणिक सहयोग के प्रति सीयूके की प्रतिबद्धता और तेजी से परस्पर जुड़ी दुनिया में अंतर्राष्ट्रीय कानूनी प्रणालियों की समझ को मजबूत करने को दर्शाता है।

शिक्षा में उभरते रुझानों और चुनौतियों पर सीयूके ने कार्यशाला का आयोजन किया

20 दिसंबर 2025: भारत में शिक्षा के बदलते परिदृश्य पर चर्चा करने के लिए शिक्षाविदों, शिक्षकों और छात्रों को एक साथ लाकर, “शिक्षा में हालिया विकास: मुद्दे और चुनौतियाँ” पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन सेंटर फॉर मल्टी-डिसिप्लिनरी डेवलपमेंट रिसर्च (सीएमडीआर), धारवाड़ के सहयोग से सीयूके में किया गया था। उद्घाटन भाषण देते हुए, ग्रामीण विकास और पंचायत राज विश्वविद्यालय, गदग के पूर्व कुलपति प्रो. विष्णुकान्त चटपल्ली ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) के तहत शिक्षा के बढ़ते अंतर्राष्ट्रीयकरण पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि विदेशी विश्वविद्यालय भारत में परिसर स्थापित करने की तैयारी कर रहे हैं, जबकि भारतीय संस्थान भी वैश्विक विस्तार की खोज कर रहे हैं। उन्होंने 21वीं सदी की शिक्षा की मांगों को पूरा करने के लिए नियामक ढांचे के पुनर्गठन की आवश्यकता पर जोर दिया और उच्च शिक्षा शासन को मजबूत करने के उद्देश्य से चल रहे सुधारों और कोविड के बाद की अवधि में गति प्राप्त करने वाले सुधारों के बारे में बात की। अपने अध्यक्षीय भाषण में, माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने इस बात पर जोर दिया कि एनईपी सिद्धांत-आधारित शिक्षा से कौशल-उन्मुख शिक्षा की ओर बदलाव का प्रतीक है जो अनुसंधान, रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच पर केंद्रित है। उन्होंने कहा कि भारत को 2047 तक विकसित भारत के विजन को प्राप्त करने के लिए अपनी तकनीकी और नीतिगत क्षमताओं को मजबूत करना चाहिए और उच्च शिक्षा नामांकन को 28 प्रतिशत से बढ़ाकर 50 प्रतिशत करने की आवश्यकता पर जोर दिया।



विशिष्ट अतिथि प्रो. आर. आर. बिरादार, कुलसचिव ने गुणवत्ता, पहुंच, सामर्थ्य और पारदर्शिता पर एनईपी के फोकस पर जोर देते हुए कहा कि भविष्य के नौकरी बाजार के लिए सॉफ्ट और हार्ड दोनों कौशल आवश्यक हैं। तकनीकी सत्रों में प्रो. थियागु और प्रो. गौरीशा ने सीखने की प्रणालियों के विकास और बदलते छात्र प्रोफाइल पर अंतर्दृष्टि दी। कार्यशाला ने राष्ट्र के भविष्य के लिए विश्व स्तर पर जुड़ी शिक्षा प्रणाली के लिए एक जीवंत मंच के रूप में कार्य किया।

प्रो. शेषानाथ भोसले को राष्ट्रीय अनुसंधान पुरस्कार प्रदान किया गया



23 दिसंबर 2025: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय में रसायन विज्ञान के प्रो. शेषानाथ भोसले को रसायन विज्ञान के क्षेत्र में उनके महत्वपूर्ण योगदान की मान्यता में भारतीय रसायनज्ञ परिषद (आईसीसी) द्वारा प्रतिष्ठित प्रो. वाहिद उद्दीन मलिक मेमोरियल पुरस्कार-2025 से सम्मानित किया गया है।

यह पुरस्कार 22 से 24, 2025 तक केएलई टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी (केएलई टेक), हुबली में आयोजित भारतीय रसायनज्ञों की 44 वीं वार्षिक राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान प्रदान किया गया था। यह सम्मान औपचारिक रूप से श्री प्रहलाद जोशी, माननीय केंद्रीय उपभोक्ता मामले, सार्वजनिक वितरण और नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री, भारतीय

रसायनज्ञ परिषद के पदाधिकारियों के साथ प्रदान किया गया। यह मान्यता प्रो. भोसले की निरंतर शैक्षणिक उत्कृष्टता और प्रभावशाली अनुसंधान योगदान को उजागर करती है, जिससे विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक समुदाय को गर्व होता है।

माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण और कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादार ने प्रो. भोसले को इस उपलब्धि पर बधाई दी और राष्ट्रीय स्तर पर रासायनिक अनुसंधान को आगे बढ़ाने और विश्वविद्यालय की शैक्षणिक प्रतिष्ठा को मजबूत करने के लिए उनके समर्पण की सराहना की।

सीयूके 'एक राष्ट्र एक सदस्यता' कार्यक्रम के माध्यम से अनुसंधान पहुंच को बढ़ावा देता है



6 जनवरी 2026: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय ने 'एक राष्ट्र एक सदस्यता' (ओएनओएस) पहल पर एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें विद्वतापूर्ण ज्ञान तक पहुंच का विस्तार करने और अनुसंधान संस्कृति को मजबूत करने में इसकी भूमिका पर प्रकाश डाला गया। सभा को संबोधित करते हुए, माननीय कुलपति प्रो. बट्टु सत्यनारायण ने जोर दिया कि भारत सरकार की पहल विद्वानों की पत्रिकाओं और डिजिटल संसाधनों की एक विस्तृत श्रृंखला तक एकीकृत पहुंच प्रदान करती है। उन्होंने कहा कि इन संसाधनों का प्रभावी उपयोग युवाओं को सशक्त बनाएगा और राष्ट्र के ज्ञान विकास में योगदान देगा।

प्रो. देविका पी. मदल्ली, निदेशक, इन्फ्लिबनेट सेंटर, गांधीनगर ने बताया कि ओएनओएस एक ही डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से 13, 000 से अधिक अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं और ई-संसाधनों तक पहुंच प्रदान करता है। उन्होंने कहा कि यह पहल छात्रों, संकाय और शोधकर्ताओं को अनुसंधान के अवसरों को बढ़ाकर, शैक्षणिक उत्पादन को बढ़ाकर और संस्थागत लागत को कम करके समर्थन करती है।

कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादार ने मौजूदा पुस्तकालय सेवाओं के साथ इन्फ्लिबनेट संसाधनों को एकीकृत करने के लिए आईसीटी-आधारित प्रशिक्षण और प्रेरण कार्यक्रम आयोजित करने में विश्वविद्यालय के प्रयासों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यह मंच मुफ्त पहुंच सुनिश्चित करता है, वित्तीय बाधाओं को दूर करता है और अंतःविषय शिक्षा और अनुसंधान के लिए नई संभावनाएं खोलता है।

लाइब्रेरियन और कार्यक्रम समन्वयक डॉ. पी. एस. कट्टिमनी ने ओएनओएस को एक एकीकृत पोर्टल के माध्यम से पत्रिकाओं और डेटाबेस तक पहुंचने के बारे में शैक्षणिक समुदायों को शिक्षित करने, इन संसाधनों के प्रभावी उपयोग को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से एक राष्ट्रीय स्तर की पहल के रूप में वर्णित किया। आईक्यूएसी के निदेशक प्रो. अमरेन्द्र, संकाय सदस्यों, डीन, प्रमुखों और शोध छात्रों के साथ इस कार्यक्रम में शामिल हुए। कार्यक्रम का आरंभ डॉ. सतीश तोटर के स्वागत भाषण से हुआ और डॉ. जी. जे. पी. दीक्षित के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ संपन्न हुआ।

2025 में आईईईई मैपकॉन में सीयूके को वैश्विक मान्यता मिली

14 जनवरी 2026: सीयूके ने रेडियो फ्रीक्वेंसी और माइक्रोवेव प्रौद्योगिकी में दुनिया के सबसे बड़े सम्मेलनों में से एक, आईईईई मैपकॉन 2025 में प्रतिष्ठित मान्यता प्राप्त करके अंतर्राष्ट्रीय प्रशंसा अर्जित की, जो ग्रांड हयात, कोच्चि, केरल में आयोजित किया गया था। सम्मेलन में 45 से अधिक देशों के प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिसमें 1,800 से अधिक प्रतिनिधि और दुनिया भर के प्रमुख विश्वविद्यालयों, अनुसंधान प्रयोगशालाओं और उद्योगों का प्रतिनिधित्व करने वाले 250 अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ शामिल थे।

एक महत्वपूर्ण उपलब्धि को चिह्नित करते हुए, सीयूके को दुनिया भर के बारह बड़े अध्यायों में से चयनित "सर्वश्रेष्ठ बड़े अध्याय पुरस्कार आईईईई एमटीटी-एस छात्र शाखा" प्राप्त हुआ। यह मान्यता तकनीकी गतिविधियों, छात्र सहभागिता और वैश्विक अनुसंधान सहयोग में विश्वविद्यालय की बढ़ती उत्कृष्टता को उजागर करती है। इलेक्ट्रॉनिक्स और संचार इंजीनियरिंग विभाग का प्रतिनिधित्व करते हुए, इंजीनियरिंग स्कूल के डीन प्रो. परमेश और डॉ. नृसिंह सी. प्रधान ने सम्मेलन में भाग लिया और सत्र अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। डॉ. प्रधान ने मुख्य आयोजन टीम के हिस्से के रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और उनके योगदान के लिए उन्हें ₹ 1.52 लाख का यात्रा अनुदान दिया गया। सीयूके के छात्रों ने इस कार्यक्रम में प्रभावशाली प्रदर्शन किया, जिसमें 18 छात्रों को एक अत्यधिक प्रतिस्पर्धी राष्ट्रीय स्तर की चयन प्रक्रिया के माध्यम से सम्मेलन स्वयंसेवकों के रूप में चुना गया।



उन्हें मुफ्त पंजीकरण, आवास, यात्रा सहायता और अन्य लाभ प्राप्त हुए। उपलब्धियों में इज़ाफ़ा करते हुए, सीयूके की एक छात्रा सुश्री सौजन्या को सम्मेलन में भाग लेने के लिए 80,000 का पुरस्कार मिला। कार्यक्रम के बाद, संकाय और छात्रों ने माननीय कुलपति, प्रो. बट्टु सत्यनारायण से मुलाकात की और परिणामों को साझा किया। उनकी उपलब्धियों की सराहना करते हुए, उन्होंने उन्हें विकसित भारत 2047 के विजन के अनुरूप नवाचार और अनुसंधान में योगदान जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया। यह उपलब्धि सीयूके के लिए गर्व का क्षण है, जो वैश्विक शैक्षणिक और अनुसंधान मंच पर इसकी उपस्थिति को और सुदृढ़ करती है।

सीयूके में मनाया गया मकर संक्रांति



14 जनवरी 2026: कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग ने छात्रों के बीच मूल्य-आधारित शिक्षा और सांस्कृतिक जागरूकता को बढ़ावा देने में त्योहारों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उत्साह के साथ मकर संक्रांति मनाई। यह उत्सव कृतज्ञता, सीखने और एकता की भावना को दर्शाता है, साथ ही परंपरा को अकादमिक शिक्षा से जोड़ता है।

मकर संक्रांति, जो सूर्य के मकर राशि में संक्रमण का प्रतीक है, लंबे दिनों, गर्म मौसम और नई शुरुआत के आगमन का प्रतीक है। यह प्रकृति की प्रचुरता के लिए आभार व्यक्त करने और आध्यात्मिक विकास को अपनाने का समय है। यह त्योहार पूरे देश में अलग-अलग नामों से मनाया जाता है, जिसमें तमिलनाडु में पोंगल, पंजाब और हरियाणा में लोहड़ी, गुजरात में उत्तरायण, असम में माघ बिहू, पश्चिम बंगाल में पौष संक्रांति, उत्तर प्रदेश और बिहार में खिचड़ी पर्व, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और तेलंगाना में

संक्रांति शामिल हैं, जो भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता को दर्शाते हैं।

कार्यक्रम ने त्योहार को मौसमी परिवर्तनों, सौर आंदोलनों और कृषि प्रथाओं से जोड़कर सार्थक शैक्षणिक अंतर्दृष्टि प्रदान की। इसने छात्रों को इस तरह के समारोहों से जुड़े गहरे मूल्यों को समझने के लिए भी प्रोत्साहित किया, जिसमें साझा करना, कृतज्ञता और सामुदायिक बंधन शामिल हैं। विज्ञान, संस्कृति और परंपरा को मिलाकर, इस कार्यक्रम ने कक्षा से परे एक आकर्षक शिक्षण अनुभव बनाया।

कार्यक्रम का उद्घाटन डीन प्रो. जी. आर. अंगड़ी ने किया। संकाय सदस्यों, पीएचडी विद्वानों, एम.एड. और बी.एड. छात्रों और गैर-शिक्षण कर्मचारियों ने उत्सव में भाग लिया, जिससे यह एक जीवंत और समावेशी अवसर बन गया जिसने परिसर में सांस्कृतिक समझ और एकता को मजबूत किया।

सीयूके में पारंपरिक उत्साह के साथ पोंगल मनाया गया

16 जनवरी 2026: सीयूके के तमिल छात्रों ने जनवरी 15 को पोंगल का उत्सव बड़े उत्साह और जीवंत सांस्कृतिक भावना के साथ मनाया। उत्सव ने परिसर में फसल उत्सव का सार जीवंत कर दिया। दिन भर चलने वाले उत्सव ने तमिल परंपराओं की समृद्धि को दर्शाया और त्योहार से जुड़े कृतज्ञता, एकता और खुशी की भावना को उजागर किया।

उत्सव की शुरुआत सुबह पारंपरिक पूजा के साथ हुई, जिसके बाद रंग-बिरंगी रंगोलियाँ बनाई गईं, जिन्होंने आयोजन स्थल में उत्सव का आकर्षण भर दिया। छात्रों ने खुशी और एकजुटता का प्रतीक कुम्मी नृत्य प्रस्तुत किया और विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं में सक्रिय रूप से भाग लिया, जो इस अवसर के महत्व को दर्शाता है।

माननीय कुलपति प्रो. बट्ट सत्यनारायण ने समारोह की अध्यक्षता की और इस उत्सव के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पोंगल पूरे भारत में प्रकृति की उदारता के प्रति कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में विभिन्न तरीकों से मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि यह त्योहार सूर्य की उत्तर की ओर यात्रा की शुरुआत का भी प्रतीक है, जिसे उत्तरायण के रूप में जाना जाता है, और इस बात पर जोर दिया कि इस तरह के उत्सव विविधता में एकता को मजबूत करते हैं और परिसर में सांस्कृतिक सद्भाव को बढ़ावा देते हैं।

कार्यक्रम के हिस्से के रूप में, छात्रों ने गणमान्य व्यक्तियों के साथ कक्षा परिसर के पास एक वृक्षारोपण अभियान भी शुरू किया, जो प्रकृति के प्रति विकास, स्थिरता और सामूहिक जिम्मेदारी का प्रतीक है। इस अवसर पर कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादार, वित्त अधिकारी श्री डी. रामादुराई, छात्र कल्याण के डीन डॉ. बसवराज कुबकडू, संकाय सदस्य और छात्र उपस्थित थे। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. जेयवेल ने सभा का स्वागत किया। उत्सव ने विश्वविद्यालय समुदाय के भीतर सांस्कृतिक गौरव, पर्यावरण जागरूकता और एकजुटता का एक मजबूत संदेश छोड़ा।



सीयूके ने छात्रों की रोजगार क्षमता बढ़ाने के लिए सॉफ्ट स्किल्स ट्रेनिंग शुरू की



19 जनवरी 2026: छात्रों को आवश्यक व्यक्तित्व और रोजगार क्षमता कौशल से लैस करने के उद्देश्य से सीयूके में तीन दिवसीय सॉफ्ट स्किल ट्रेनिंग प्रोग्राम का उद्घाटन किया गया। यह कार्यक्रम सॉफ्ट स्किल्स डेवलपमेंट सेंटर, सीयूके द्वारा मैजिक बस इंडिया फाउंडेशन के सहयोग से आयोजित किया जा रहा है, जो रिलायंस फाउंडेशन स्किलिंग अकादमी, बेंगलुरु के लिए काम करता है।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए, सीयूके के माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने व्यक्तित्व विकास और करियर की सफलता में सॉफ्ट स्किल्स के महत्व पर जोर दिया। छात्रों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि संचार कौशल नेतृत्व और व्यावसायिक विकास के लिए बुनियादी आधार बनाता है, विशेष रूप से व्यवसाय अध्ययन के छात्रों के लिए। उन्होंने कहा कि प्लेसमेंट के लिए योग्यता और डोमेन ज्ञान महत्वपूर्ण है, लेकिन नौकरी हासिल करने और कार्यस्थल में सफल होने के लिए सॉफ्ट स्किल्स महत्वपूर्ण हैं। मैजिक बस इंडिया फाउंडेशन के एक रिसोर्स पर्सन, श्री अजय ने बताया कि तीन दिवसीय प्रशिक्षण में सामान्य, तकनीकी और नौकरी-उन्मुख दक्षताओं पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

उन्होंने बताया कि सत्र गतिविधि-आधारित और संवादात्मक होंगे, जिसमें समूह चर्चा, भूमिका निभाना और खेल शामिल होंगे, जिससे आपसी सीखने और सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित होगी, जिससे प्रशिक्षण छात्रों के लिए आकर्षक और व्यावहारिक दोनों होगा। इससे पहले, सॉफ्ट स्किल डेवलपमेंट सेंटर की निदेशक डॉ. सुषमा एच ने परिचयात्मक भाषण दिया और छात्रों को सही कौशल के साथ भविष्य के अवसरों को लेने के लिए तैयार होने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि केंद्र की स्थापना उद्योग की आवश्यकताओं और छात्रों की क्षमताओं के बीच की खाई को पाटने के लिए 360 डिग्री कौशल प्रशिक्षण प्रदान करके और छात्रों को भविष्य के लिए तैयार होने में मदद करके की गई थी। डीन, व्यावसायिक अध्ययन स्कूल, प्रो. पांडुरंग वी. पत्ती ने सभा का स्वागत किया। डॉ. सफिया परवीन ने कार्यक्रम का संचालन किया और डॉ. महेंद्र जी ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। इस अवसर पर डॉ. एम. जोहेर, डॉ. रेखा, डॉ. पूजिता, प्रो. देवराजप्पा, प्रो. पद्मश्री, डॉ. गणपति बी. सिन्नूर, डॉ. लिंगमूर्ति, डॉ. शिवकुमार बेल्ली, डॉ. जगदीश, डॉ. नटराज, डॉ. नवीन, डॉ. शैलजा कोनेक, संकाय सदस्यों और छात्रों के साथ उपस्थित थे।



कर्नाटक केन्द्रीय विश्वविद्यालय फुटबॉल पुरुष टीम 5 से 11 तक ज़हीराबाद के वोक्सेन विश्वविद्यालय में होने वाले दक्षिण पूर्व क्षेत्र अंतर-विश्वविद्यालय फुटबॉल टूर्नामेंट में भाग लेने के लिए तैयार है। माननीय कुलपति, प्रो. बट्टू सत्यनारायण, शारीरिक शिक्षा निदेशक, डॉ. एम. एस. पासोडी, और डीन, रासायनिक विज्ञान स्कूल, प्रो. वेंकटरमण दोड्डी उपस्थित थे और टीम का स्वागत किया।

आरक्षण नीति का अध्ययन करने के लिए कर्नाटक सरकार की टीम ने सीयूके का दौरा किया



21 जनवरी 2026: कर्नाटक सरकार के समाज कल्याण विभाग के एक प्रतिनिधिमंडल ने केंद्रीय शैक्षिक संस्थान अधिनियम, 2019 के कार्यान्वयन, विशेष रूप से विश्वविद्यालय में पालन की जाने वाली आरक्षण प्रणाली का अध्ययन करने के लिए कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय का दौरा किया। टीम के साथ बातचीत के दौरान, माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने कहा कि सीयूके ने भारत सरकार की आरक्षण नीति को अक्षरशः और भावना से लागू किया है। उन्होंने प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा अपनाए गए तंत्र और प्रक्रियाओं के बारे में विस्तार से बताया, और कहा कि केंद्र सरकार ने आरक्षण मानदंडों को बनाए रखने के लिए सीयूके के प्रयासों की ईमानदारी से और व्यवस्थित रूप से सराहना की है। आगंतुक प्रतिनिधिमंडल में डॉ. राकेश कुमार के, आईएएस, आयुक्त, समाज कल्याण विभाग, कर्नाटक सरकार, और ई. वेंकटैया, आईएएस (सेवानिवृत्त), सलाहकार, एससीएसपी/एसटीपी नोडल एजेंसी, बेंगलुरु के अन्य अधिकारियों के साथ शामिल थे। उन्होंने आरक्षण और समावेशी नीतियों से संबंधित संस्थागत प्रथाओं, निगरानी प्रणालियों और प्रशासनिक प्रक्रियाओं को समझने के लिए विश्वविद्यालय के अधिकारियों के साथ विस्तृत चर्चा की। इस अवसर पर कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादार, समान अवसर प्रकोष्ठ के संपर्क अधिकारी प्रो. देवराजप्पा, कानून स्कूल के डीन प्रो. बसवराज कुबकड्डी, संपर्क अधिकारी, ईडब्ल्यूएस प्रकोष्ठ डॉ. गणपति बी. सिन्नूर, संपर्क अधिकारी, ओबीसी प्रकोष्ठ डॉ. बसवराज एम. एस, संपर्क अधिकारी, अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ डॉ. अलीम पाशा, उप- कुलसचिव डॉ. अजरुद्दीन, डॉ. पंडित और सहायक कुलसचिव सुनील के उपस्थित थे। इस यात्रा ने सार्थक शैक्षणिक और प्रशासनिक आदान-प्रदान को सुगम बनाया, जिससे विश्वविद्यालय की समानता, पारदर्शिता और समावेशी शिक्षा के प्रति प्रतिबद्धता को बल मिला, साथ ही विश्वविद्यालय और राज्य के समाज कल्याण प्राधिकरणों के बीच समन्वय को मजबूत किया गया।

सीयूके ने राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाया, युवाओं से लोकतंत्र को मजबूत करने का आग्रह किया

27 जनवरी 2026: जिम्मेदार नागरिकता और लोकतांत्रिक भागीदारी के महत्व पर जोर देते हुए, सीयूके ने चुनावी प्रक्रिया में युवा भागीदारी के लिए एक मजबूत आह्वान के साथ राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाया। सभा को संबोधित करते हुए माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने अठारह वर्ष से अधिक आयु के सभी लोगों से मतदाता के रूप में पंजीकरण कराने का आग्रह करते हुए कहा, “मतदाता लोकतंत्र का हृदय हैं। वोट देना सिर्फ एक अधिकार नहीं बल्कि एक जिम्मेदारी है उन्होंने चिंता व्यक्त की कि शिक्षित शहरी क्षेत्रों में ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में मतदान प्रतिशत अक्सर कम होता है और छात्रों को चुनाव दिवस को छुट्टी के रूप में नहीं, बल्कि राष्ट्र के भविष्य में योगदान करने के अवसर के रूप में मानने के लिए प्रोत्साहित किया।

मुख्य अतिथि डॉ. सुभाषचंद्र राठौड़, विधि विभाग में प्रैक्टिस के प्रोफेसर ने स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित करने में मतदाताओं के बढ़ते महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने शिक्षित युवाओं को लोकतंत्र की ताकत बताया और छात्रों को बिना किसी चूक के पंजीकरण और मतदान करने के लिए प्रोत्साहित किया। अतिथि के रूप में उपस्थित छात्र कल्याण के डीन प्रो. बसवराज कुबकड्डी ने चुनावों में भाग लेकर संविधान का सम्मान करने की आवश्यकता पर जोर दिया और कहा कि कम मतदान के परिणामस्वरूप अक्सर आंधे से भी कम आबादी द्वारा प्रतिनिधि चुने जाते हैं। कुलसचिव प्रो. आर. आर. बिरादार ने सुशासन और जिम्मेदार मतदान के बीच संबंध को रेखांकित करते हुए छात्रों को “मेरा भारत, विकसित भारत के लिए मेरा वोट” के आदर्श वाक्य को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया



कार्यक्रम समन्वयक और स्वीप नोडल अधिकारी डॉ. गणपति बी सिन्नूर ने बताया कि राष्ट्रीय मतदाता दिवस युवा वर्ग में जागरूकता पैदा करने के लिए मनाया जाता है, जो 25 जनवरी, 1950 को भारतीय निर्वाचन आयोग की स्थापना का प्रतीक है। कार्यक्रम का समापन एक मजबूत संदेश के साथ हुआ: हर वोट मायने रखता है, और एक जीवंत, जिम्मेदार और प्रगतिशील लोकतंत्र के निर्माण के लिए चुनावों में सक्रिय भागीदारी आवश्यक है।

एनआरएससी ने के लिए भूजल योजना प्रस्तुत की

30 जनवरी 2026: सतत परिसर विकास की दिशा में एक बड़े कदम के रूप में, राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र (एनआरएससी), हैदराबाद ने माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण को "सीयूके के लिए भूजल प्रबंधन और स्थिरता योजना" प्रस्तुत की। यह पहल वैज्ञानिक योजना और उन्नत प्रौद्योगिकी के माध्यम से दीर्घकालिक जल संसाधनों को सुरक्षित करने के लिए विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता को उजागर करती है।

रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए, एनआरएससी के भूविज्ञान समूह के निदेशक डॉ. ईश्वर चंद्र दास ने कहा कि कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय में भूजल अन्वेषण और सतत जल सुरक्षा की महत्वपूर्ण क्षमता है। उन्होंने बताया कि बेसाल्टिक भूभाग में स्थित परिसर में भूजल की गति फ्रेक्चर, जोड़ों और अपक्षयित क्षेत्रों से प्रभावित है। इस अध्ययन में रिमोट सेंसिंग, जीआईएस, मैग्नेटोमीटर सर्वेक्षण, ग्राउंड-पेनेट्रेटिंग रडार और इलेक्ट्रिकल रेजिस्टिविटी टोमोग्राफी के साथ-साथ व्यापक क्षेत्र जांच का उपयोग करके बहु-विषयक दृष्टिकोण अपनाया गया, ताकि जल विज्ञान ढांचे और भूजल क्षमता का आकलन किया जा सके।

निष्कर्षों से पता चला कि पूरे परिसर में अलग-अलग स्थितियां हैं, कुछ क्षेत्रों में पानी का स्तर घट रहा है और अन्य क्षेत्रों में उथले स्तर हैं, जो मध्यम वर्षा, अतिभार मोटाई और सीमित पुनर्भरण से प्रेरित हैं। विस्तृत भू-जलवैज्ञानिक मानचित्रण के आधार पर, रिपोर्ट जल पुनर्भरण बढ़ाने और अपवाह को नियंत्रित करने के लिए कैस्केडिंग चेक डैम, जलाशय, ट्रेचिंग संरचनाएं, समोच्च बांध और उपसतह डाइक जैसे व्यावहारिक उपायों का प्रस्ताव करती है। यह भूजल अन्वेषण के लिए 21 नए स्थलों की पहचान करता है, जिसमें 150 - 200 मीटर की गहराई तक ड्रिलिंग की सिफारिश की गई है।

प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने जल संसाधनों में आत्मनिर्भर बनने के विश्वविद्यालय के दृष्टिकोण को व्यक्त किया और सिफारिशों के चरणबद्ध कार्यान्वयन का आश्वासन दिया। उन्होंने इस पहल का समर्थन करने के लिए इसरो के अध्यक्ष डॉ. वी. नारायणन को धन्यवाद दिया। यह परियोजना भविष्य की जरूरतों के लिए तैयार एक लचीला, पर्यावरण के प्रति सजग परिसर बनाने में एक महत्वपूर्ण कदम है।

सीएस-एथॉन 2026 सीयूके में नवाचार को प्रज्वलित करता है



30 जनवरी 2026: सीयूके ने भारत सरकार के एआई इम्पैक्ट समिट- 2026 के तहत प्री-समिट इवेंट के रूप में आयोजित कंप्यूटर विज्ञान विभाग द्वारा राष्ट्रीय स्तर के हैकथॉन सीएस-एथॉन 2026 के उद्घाटन के साथ तकनीकी रचनात्मकता और राष्ट्रीय सहयोग के लिए मंच तैयार किया। हैकथॉन ने देश भर के युवा नवोन्मेषकों को एक साझा दृष्टिकोण के साथ एकजुट किया, जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता और उभरती प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके वास्तविक दुनिया की समस्याओं को हल करने के लिए एकजुट हुए।

मुख्य अतिथि डॉ. चंद्रशेखर बुद्ध, अनुवादिनी एआई के सीईओ और एआईसीटीई के मुख्य समन्वय अधिकारी ने सुरक्षित, स्वदेशी डिजिटल प्लेटफॉर्म बनाने के महत्व पर जोर देकर प्रतिभागियों को प्रेरित किया। उन्होंने छात्रों को नवीन, भारत-केंद्रित तकनीकी समाधान बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जो राष्ट्रीय विकास और डिजिटल स्वतंत्रता को मजबूत करते हैं। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए माननीय कुलपति प्रो. बट्टू सत्यनारायण ने डिजिटलीकरण, स्मार्ट कृषि और राष्ट्र निर्माण जैसे क्षेत्रों में उभरती प्रौद्योगिकियों की बढ़ती

प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने छात्रों से रचनात्मक विचारों को व्यावहारिक अनुप्रयोगों में बदलने का आग्रह किया जो विकसित भारत 2047 के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाते हैं। सभा का स्वागत करते हुए, कंप्यूटर विज्ञान स्कूल के अध्यक्ष और डीन प्रो. श्रीकान्तह के.सी. ने नवाचार को बढ़ावा देने के लिए विभाग की प्रतिबद्धता पर जोर दिया। नोडल अधिकारी डॉ. नागराज वी. धारवाड़कर ने हैकथॉन का अवलोकन प्रस्तुत करते हुए कहा कि भारत भर से लगभग 300 छात्रों की 102 टीमों ने शुरू में अपने सार प्रस्तुत किए थे। मूल्यांकन के बाद, देशभर के विभिन्न राज्यों का प्रतिनिधित्व करने वाली लगभग 120 प्रतिभागियों वाली 40 टीमों को ऑन कैंपस प्रतियोगिता के लिए चुना गया।

कार्यक्रम का समापन हैकथॉन समन्वयक डॉ. राकेश कुमार गोडी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। सीएस-एथॉन 2026 एक शक्तिशाली मंच है जो युवा दिमागों को नवाचार करने, सहयोग करने और राष्ट्र के तकनीकी भविष्य को आकार देने के लिए सशक्त बनाता है।



स्वतंत्रता और एकता की भावना

“एकता के बिना जनशक्ति कोई शक्ति नहीं है, जब तक कि उसे ठीक से समन्वित और एकजुट न किया जाए; तब वह एक आध्यात्मिक शक्ति बन जाती है।”
—सरदार वल्लभभाई पटेल



आपकी भागीदारी की अपेक्षा है।

संपादकीय टीम

मुख्य संपादक: प्रो. बट्ट सत्यनारायण, माननीय कुलपति, सीयूके
संपादक: डॉ. ओइनम बेदाजीत मेइतेई; सह संपादक: डॉ. के. कार्तिक, डॉ. रूपा रानी सोनोवाल, डॉ. दीप्ति;
प्रेस विज्ञप्ति: डॉ. गणपति बी सिन्नूर; हिंदी अनुवाद: डॉ. रेशमा एल. नदाफ
छात्र संपादक: इंदुजा मजूमदार और पद्मजा पीजी
प्रकाशक: प्रो. आर आर बिरादार, कुलसचिव, सीयूके



कृपया सीयूके बुलेटिन में फीचर करने के लिए विभागीय घटनाओं/उपलब्धियों का संक्षिप्त विवरण ईमेल: bulletin@cuk.ac.in पर भेजें।